हकें दिया इलम अपना, तिनका तो हकै से काम।
और हम को क्या हक बिना, रात दिन लेना क्यों आराम।।७० ।।

हक ने जिनको अपना इलम दिया है उनको हक से ही काम है। हमको हक के बिना रात-दिन कैसे आराम हो सकता है?

हम खेल देख्या लग मुद्दत, जेते रूहअल्ला के तन।
खेल देख पीछे फिरें, जानें बेर न लगी अधखिन।।७१ ।।

हम श्यामा महारानी के जितने तन (रूहें) हैं, उन्होंने समझा है कि जैसे हम मुद्दतों से खेल देख रहे हैं, परन्तु खेल देखकर जब वापस जाएंगे और देखेंगे तो आधे क्षण का समय भी नहीं हुआ होगा।

ए देख्या बैठे वतन में, हक सुख लिए हम इत।
सो इन देह इन जिमिऐं, लिए सुख हक निसबत।।७२ ।।

हमने घर बैठकर यह खेल देखा और खेल में हक के सुखों को हमने यहां इस तन और यहां की जमीन पर लिया और अपनी निसबत को पहचाना।

फेर फेर हक वाहेदत्त, फेर फेर हक खिलवत।
फेर फेर सुख निसबत के, फेर फेर ए लई न्यामत।।७३ ।।

हमने बार-बार हक की खिलवत और वाहेदत तथा निसबत होने के सुखों की न्यामत प्राप्त की।

महामत कहें मोमिन की, मिट गई दुनियां चाल।
देखिए हक दिल अर्स में, तो अबहीं बदले हाल।।७४ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मोमिनों की दुनियां वाली रहनी मिट गई। यदि हम अपने अर्श दिल में हक को देखें तो हमारी भी रहनी अभी बदल जाएगी।

।। प्रकरण ।। ३९ ।। चौपाई ।। १५४० ।।

सनन्ध–खंडनी जाहेरियों की

लिख्या है कतेब में, पाया न किन ठौर।
ना फरिस्तों ना नबियों, तो क्यों पावे कोई और।। १ ।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान ग्रन्थों में तो पारब्रह्म की पहचान लिखी है, पर किसी को उसकी पहचान या ठिकाने का पता नहीं चला। जब फरिश्तों और पैगम्बरों को ही नहीं पता चला तो और कोई कैसे पा लेता?

लिख्या जो रसूल ने, तिन तो कह्या अगम।
तबक चौदे ख्वाब के, न्यारा रह्या खसम।। २ ।।

रसूल साहब ने भी कुरान में लिखा है कि पारब्रह्म अगम है (पहुंचा नहीं जा सकता)। चौदह लोक का ब्रह्माण्ड सपने का है, इसलिए पारब्रह्म इससे न्यारा है।

खुद तो किन को ना मिल्या, अब काजी कजा चलाए।
कहें जो चाहे खुद को, हम मिलावें ताए।। ३ ।।

खुदा किसी को नहीं मिला। अब श्री प्राणनाथजी काजी (न्यायाधीश) बनकर न्याय करने आए हैं और कहते हैं कि जिसे पारब्रह्म चाहिए वह हमारे पास आओ, हम मिलाते हैं।

Nijanand App

पढ़े मुल्लां आगूं हुए, सो तो खाए गुमान।
लोकों को बतावहीं, कहें हम पढ़े कुरान।। ४ ।।

आगे पढ़े-लिखे मुल्ला हुए तो, पर अहंकार में डूब गए। लोगों को कहते हैं कि हम कुरान पढ़े हैं।

दुनी बदले दीन खोवहीं, चलें सो उलटी रीत।
सुपने के सुख कारने, लोभें किए फजीत।। ५ ।।

यह मुल्ला लोग उलटी चाल चलते हैं। दुनियां के बदले दीन की परवाह नहीं करते। सपने के सुख के वास्ते ही लोभ में इनकी फजीहत (मिट्टी पलीत) हो रही है।

राह बतावें दुनी को, कहें ए नबिएं कहेल।
लिख्या और फुरमान में, ए खेलें औरै खेल।। ६ ।।

दुनियां को मनगढ़ंत रास्ता बताते हैं और कहते हैं कि रसूल साहब ने कहा है। कहते हैं कि कुरान में ऐसा ही लिखा है। इन्होंने इसे अपनी कमाई का धन्धा बना रखा है।

ए जो मोहोरे खेल के, धरें भेख विवाद।
एक भान दूजा धरें, कहें हमें होत सवाब।। ७ ।।

खेल में बड़े-बड़े ज्ञानी, अगुए, मुल्ला, पादरी सभी अलग-अलग भेष धारण कर आपस में विवाद करते हैं। एक धर्म छुड़वाकर दूसरा धर्म धारण करवाते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिल रहा है।

ओ राजी एक भेख में, ताए मार छुड़ावें दाब।
ओ रोवे सिर पीटहीं, ए कहें हमें होत सवाब।। ८ ।।

साधारण व्यक्ति अपने एक ही धर्म में चलता है। उसको मार-मारकर उसका धर्म छुड़ाते हैं। वह व्यक्ति इनकी मार से रोता है, सिर पीटता है। यह कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

एक खाई ग्रहतें काढ़ के, ले डारें दूजी खाड़।
ज़ब्हे करें जोरावरी, कहें हमें होत सवाब।। ९ ।।

एक खाई (गड्ढे) से निकालकर दूसरी खाई में डालते हैं और जबरदस्ती उसकी सुंनत कर देते हैं और कहते हैं कि हमें सवाब होता है।

हिन्दू मुए जलावहीं, और ए आए तिन गाड़।
मिल तिन की जारत करें, कहें हमें होत सवाब।। १० ।।

हिन्दू मुर्दे को जलाते हैं और यह उसे गाड़ आते हैं। इस तरह मुर्दों की समाधि (मज़ार) बनाकर सिजदा करते हैं और कहते हैं हमें लाभ मिलता है।

मार डार पछाड़हीं, ओ रोए पीट होवे ताब।
इन बिध जातां बदलें, कहें हमें होत सवाब।। ११ ।।

साधारण इन्सान को मारते हैं और पीटते हैं। वह रो-पिटकर इनके अधीन हो जाता है। इस तरह से जातें बदलते हैं। कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

जैसे मछ गलागल, ना किनकी मरजाद।
यों खैंच लेवें आप में, कहें हमें होत सवाब।। १२ ।।

जैसे मगरमच्छ बिना रहम छोटे जानवरों को निगल जाते हैं, उसी प्रकार यह साधारण व्यक्ति को अपने धर्म में खींचते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य होता है।

Nijanand App

करें जुलम गरीब पर, कोई न काहूं फरियाद।
कर सुंनत गोस्त खिलावहीं, कहें हमें होत सवाब।। १३ ।।

इस तरह गरीबों पर जुल्म ढाते हैं उनकी कोई फरियाद नहीं सुनता। उनकी सुंनत करके गोश्त खिला देते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिल रहा है।

कोई जालिम जीव जनम का, खुराकी गोस्त सराब।
तिनको लेवें दीन में, कहें हमें होत सवाब।। १४ ।।

कोई जन्म से ही जालिम हो, जिसकी खुराक ही गोश्त और शराब हो, उसको अपने धर्म में मिला लेते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

सिरोपाव दे गज चढ़ावहीं, ओ जाने हुआ खराब।
ए बजाए बाजे कूदहीं, कहें हमें होत सवाब।। १५ ।।

साधारण व्यक्ति को सम्मानित कर हाथी पर चढ़ा देते हैं, जबकि वह धर्म बदलने पर दुःखी होता है। यह बाजे बजा कर उसके सामने नाचते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

काफर को मुस्लिम करें, मिनें लेवें दीन हिसाब।
सिर मूड़ दाढ़ी रखें, कहें हमें होत सवाब।। १६ ।।

हिन्दू को जब मुसलमान बनाते हैं तो उसका सिर मूंड कर दाढ़ी रख देते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

खाना खिलावें आप में, देखलावें मसीत मेहेराब।
लेकर कलमा पढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब।। १७ ।।

अपने साथ बिठाकर खाना खिलाते हैं और मस्जिद में ले जाकर मेहराब के सामने कलमा पढ़ाते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिल रहा है।

चित दे एक चुनावहीं, हिन्दू जो आद के आद।
सो जोरा करके ढ़हावहीं, कहें हमें होत सवाब।। १८ ।।

हिन्दू लोग पहले से ही जो मन्दिर बनाते हैं उनको यह (मुसलमान) गिरा देते हैं और कहते हैं कि हमें यह पुण्य मिलता है।

हिन्दू मसीतां ढ़हावहीं, मुसलमानसों वाद।
दें सोभा इष्ट दीन को, कहें हमें होत सवाब।। १९ ।।

फिर हिन्दू लोग मस्जिदों को गिराते हैं और मुसलमानों से झगड़े करते हैं। धर्म का नाम लगाकर कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

सुध इष्ट न दीन की, मोह माते उनमाद।
ज्यों ज्यों वैर बढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब।। २० ।।

इनको न अपने इष्ट की खबर है न धर्म की। मोह की मस्ती में डूबे हैं और जैसे-जैसे बैर बढ़ाते हैं, कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

गरक हुए मोह गुमान में, जनम गमावत वाद।
या बिध खैंचें आप में, कहें हमें होत सवाब।। २१ ।।

इस तरह से अहंकार में डूबकर अपने जन्म को व्यर्थ गंवा देते हैं। इस तरह से अपने धर्म में खींचते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

Nijanand App

यों पढ़े राह बतावहीं, खेलें मिने ख्वाब।
जाहेर जुलम होवहीं, कहें हमें होत सवाब।। २२ ।।

पढ़े-लिखे लोग संसार में जाहिरी जुल्म करते हैं और गुमराह करते हैं और कहते हैं कि हमें पुण्य मिलता है।

पर सवाब तो तिन को होवहीं, छोटा बड़ा सब जिउ।
एकै नजरों देखहीं, सब का खावंद पिउ।। २३ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि चाहे छोटा जीव हो या बड़ा जीव हो, सबको एक नजर से देखकर सबको एक पारब्रह्म की जो पहचान कराए उसको पुण्य मिलता है।

जो दुख देवे किनको, सो नाहीं मुसलमान।
नबिऐं मुसलमान का, नाम धरया मेहेरबान।। २४ ।।

रसूल साहब ने साफ लिखा है कि जो किसी को दुःख देता है वह मुसलमान नहीं है। नबी ने मुसलमान का नाम मेहरबान रखा है।

कोई बूझे ना इसलाम को, ना लगें नबी के बान।
ना सुध सल्ली ना बंदगी, कहें हम मुसलमान।। २५ ।।

कोई धर्म को समझता नहीं और न किसी को नबी के वचनों की चोट ही लगती है, उन्हें न निमाज की, न बन्दगी की खबर है, और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

कौन दीन क्यों चलना, और क्यों रेहेनी फुरमान।
क्यों अंतर मांहें बाहेर, कहें हम मुसलमान।। २६ ।।

दीन क्या है, उसके अनुसार कैसे चलना है, कुरान के हिसाब से अन्दर और बाहर से रहनी कैसी होनी चाहिए, इसकी तो खबर नहीं हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ना सुध उजू निमाज की, ना रोजे रमजान।
ना तसबी ना नाम की, कहें हम मुसलमान।। २७ ।।

न उजू (पाक होने की) की, न निमाज की, न रमजान में रोजे की और न अल्लाह के नाम की माला फेरने की सुध होती है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

सुध नहीं दिल साफ की, ना कछू सब्द पेहेचान।
ना सुध छल ना वतन, कहें हम मुसलमान।। २८ ।।

दिल साफ कैसे करना है, नबी के शब्दों को कैसे पहचानना है, यह माया क्या है और वतन कहां है, यह सुध नहीं है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

मैं कौन आया किन ठौर से, कहा देखत हों जहान।
कौन नबी भेज्या किने, कहें हम मुसलमान।। २९ ।।

मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, संसार में क्या देखता हूं, रसूल को किसने भेजा और रसूल कौन हैं, की पहचान नहीं है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

हक को कबूं ना याद करें, हुए नहीं गलतान।
खुद कबूं ना सुपने, कहें हम मुसलमान।। ३० ।।

पारब्रह्म को कभी याद नहीं करते और न उसमें मग्न ही होते हैं, पारब्रह्म के बारे में कभी सपने में भी नहीं सोचते और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

Nijanand App

ए तो आग है जलती, ताए लई सुख मान।
देखाए भी अंधे न देखहीं, कहें हम मुसलमान।। ३१ ।।

यहां तो माया (कुफ्र) की आग जलती है। इसी को उन्होंने सुख मान लिया है। ऐसे अन्धे हो गए हैं कि समझाने पर नहीं समझते और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

बाहेर के देखावहीं, अंदर आंख न कान।
सो कहा सुने कहा देखसी, कहें हम मुसलमान।। ३२ ।।

बाहरी रूप बनाकर दिखाते हैं। अन्दर सोचने की शक्ति नहीं है। जिसके अन्दर के आंख-कान नहीं, वह क्या सुनेंगे और क्या देखेंगे? फिर कहते हैं हम मुसलमान हैं।

विध भी देखावें बाहेर की, सुध नहीं वृध हान।
ना पेहेचान जो रूह की, कहें हम मुसलमान।। ३३ ।।

तरीका भी बाहर का दिखाते हैं और हानि-लाभ की सुध नहीं है, अपनी रूह की भी पहचान नहीं है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

गुन ना देखें काहू को, अवगुन लेवें सिरतान।
आप पड़े बस इंद्रियों, कहें हम मुसलमान।। ३४ ।।

किसी के गुण नहीं देखते, उसके अवगुण जल्दी पकड़ लेते हैं तथा इन्द्रियों के वश में पड़े रहते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

जुलम करें कई जालिम, मूंदी आंखें गुमान।
खून करते ना डरें, कहें हम मुसलमान।। ३५ ।।

ऐसे जालिम लोग कई तरह के जुल्म करते हैं, जिनकी आंखें बन्द होती हैं, अहंकार में डूबे होते हैं, खून करने में डरते नहीं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

नीयत ना नीकी कबहुं, जनम दगाई जान।
निस दिन चाहें छल को, कहें हम मुसलमान।। ३६ ।।

इनकी नीयत कभी साफ नहीं होती। जन्म से ही दगाबाज होते हैं। रात-दिन छल का ही काम करते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

मने उड़ाए तूल ज्यों, न पावें ठौर ठेहेरान।
सो सारे गफलतें फिरें, कहें हम मुसलमान।। ३७ ।।

इनका मन आक के तूल (रुई) के समान उड़ता फिरता है, इन्हें अपने ठिकाने का पता नहीं कि जाना कहां है, यह अंधेरे में ही घूमते फिरते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ले गरब खड़े होवहीं, जाने हम ही मेर समान।
ना सुध भारी हलके, कहें हम मुसलमान।। ३८ ।।

अहंकार लेकर ऐसे खड़े होते हैं जैसे पर्वत के समान हों, उनको बड़े-छोटे की खबर नहीं होती और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

कहे अंग तो काम क्रोध के, गोस्त खान मद पान।
हक हराम न जानहीं, कहें हम मुसलमान।। ३९ ।।

इनके सब अंग काम-क्रोध से भरे होते हैं, इनका खान-पान भी गोश्त और शराब का होता है, सत और झूठ की पहचान नहीं होती और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

Nijanand App

सुपेत हुए स्याही गई, स्याही अंदर बढ़ती जान।
काट गला लोहू पीवहीं, कहें हम मुसलमान।। ४० ।।

ऊपर के काले बाल सफेद हो गए हैं तथा मन की निर्मलता काली हो गई है, दूसरे का गला काटकर खून पीते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

दुख ना देखें और को, ऐसे हिरदे निपट पाखान।
दुख देते ना सकुचें, कहें हम मुसलमान।। ४१ ।।

किसी के दुःख को दर्द से नहीं देखते। ऐसे इनके दिल पत्थर हो गए हैं। दूसरे को दुःखी करने में जरा भी संकोच नहीं करते और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ब्राह्मण कहें हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक।
दोऊ मुठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक।। ४२ ।।

ब्राह्मण अपने को उत्तम बताते हैं और मुसलमान अपने को पाक कहते हैं। दोनों ही एक ठिकाने के हैं। एक राख हो जाता है, दूसरा खाक हो जाता है।

कुफर न काढ़ें आपको, और देखें सब कुफरान।
अपना अवगुन ना देखहीं, कहें हम मुसलमान।। ४३ ।।

अपने कुफ्र को निकालते नहीं और दुनियां को काफिर कहते हैं। अपने अवगुण देखते नहीं है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ज्यों सुपनें में मनुआ, आप भाव सब ठौर।
तरंग जैसा आप में, सोई देखे मिने और।। ४४ ।।

जैसे स्वप्न में मन भटकता है और सबको एक जैसा समझता है, जैसे खुद होता है, वैसे ही अन्दर की विचारधारा से सब देखता है।

बदी न छोड़ें एक पल, डर न रखें सुभान।
फैल करें चित चाहते, कहें हम मुसलमान।। ४५ ।।

बद फैली की भावना एक क्षण को भी नहीं छोड़ते, सुभान (अल्लाह) का डर नहीं है, मनचाहा कुकर्म करते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ना परतीत जो और की, यों पढ़े काजी कुरान।
राह बतावें और को, कहें हम मुसलमान।। ४६ ।।

दूसरों पर विश्वास नहीं करते और कुरान के बड़े काजी कहलाते हैं। दूसरों को अपने मन के अनुसार रास्ता बताते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

हिरदे फूटे ऐसे बेसुध, एता भी न रहे याद।
खुद काजी आखिर होएसी, तब देसी कहा जवाब।। ४७ ।।

हृदय की आंखें फूटी हैं और ऐसे बेसुध हैं कि इतना भी इनको याद नहीं है कि खुद खुदा आखिर में काजी बनकर आएगा, तब उसको क्या जवाब देंगे?

कलाम अल्ला काजी पढ़ें, पर होत नहीं आकीन।
कैसा डर कौन आवहीं, तो हलका किया दीन।। ४८ ।।

काजी बनकर कुरान को पढ़ते हैं और खुद को यकीन नहीं होता। खुदा का कैसा डर? कब खुदा आएगा? कौन आएगा? इस तरह से उन्होंने दीन (धर्म) को हलका कर रखा है।

Nijanand App

तिनों तो सस्ता किया, जिनों नहीं भरोसा निदान।
या विध आपे अपना, हलका करें कुरान।। ४९ ।।

इन्होंने कुरान को इतना सस्ता बना दिया है कि उसके वचनों पर भरोसा नहीं करते। इस तरह से स्वयं ही कुरान को हलका करते हैं।

महामत केहेवे यों कर, ए पढ़े बड़े कुफर।
बातून नजर इन को नहीं, तो कजा की न हुई खबर।। ५० ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि यह पढ़े-लिखे बड़े लोग ही काफिर हैं। इनकी नजर बातूनी नहीं है, इसलिए इनको कजा के दिन की खबर नहीं है।

।। प्रकरण ।। ४० ।। चौपाई ।। १५९० ।।

सनन्ध–पत्री बड़ी

यह पत्री मेड़ते में बांग सुनने के बाद सुन्दरसाथ को लिखी है।

तुमको देऊं सुख जागनी, साथजी मेरे आधार।
भेख धरे जो वासना, छोटे बड़े नर नार।। १ ।।

हे मेरे साथजी! मैं तुमको जागनी के सुख देता हूं। तुम मेरी आत्मा के आधार हो और परमधाम की वासना हो। यहां आकर नर-नारी का भेष धारण किया है, जिनमें कोई गरीब है कोई अमीर है।

सुनियो भीम मकुंदजी, ऊद्धव केसो स्याम।
हम पाती पढ़ी महंमद की, सब पाई हकीकत धाम।। २ ।।

हे भीम भाईजी, मुकंददासजी, उद्धवजी, केशोदासजी तथा स्याम भइजी! मैंने मुहम्मद साहब की चिट्ठी (कुरान) पढ़ी। उसमें हमारे घर की सारी हकीकत है।

अपने घर की इसारतें, और न समझे कोए।
और कोई तो समझे, जो कोई दूसरा होए।। ३ ।।

यह अपने घर की बातें दूसरे नहीं समझ सकते। दूसरा कोई उस घर का है ही नहीं, तो समझेगा कैसे?

वतन की बातें सबे, पाई हमारी हम।
सो ए रोसन करत हों, कहियो साथ को तुम।। ४ ।।

हमारे घर की सारी बातें इसमें हमको मिलीं। वह मैं तुमको बताता हूं। तुम भी सुन्दरसाथ को कहना (बताना)।

किया बरनन श्री धाम का, कई विध लिखे निसान।
साथ को सुख उपजावने, ठौर ठौर किए बयान।। ५ ।।

इसमें परमधाम का वर्णन और कई तरह के निशान हैं। सुन्दरसाथ को सुख देने के वास्ते अलग-अलग ठिकाने पर समाचार लिखा है।

जमुना जरी किनार पर, कई दयोहरियां तलाब।
भांत भांत रंग झलकत, यों कई जवेर जड़ाव।। ६ ।।

यमुनाजी के किनारे पर मोती जड़े हैं और हौज कौसर तालाब के चारों तरफ दयोहरियां (गुमटियां) हैं, जिनमें तरह-तरह के रंग और जवाहरात जड़े हुए झलकते हैं।

Nijanand App